बढ़ती बॉन्ड यील्ड समझिए: ईरान-युद्ध, राजकोषीय चिंता और RBI का आकलन

अर्थव्यवस्था/वित्तीय बाज़ार | समाचार संदर्भ: 29 मई-1 जून 2026 | प्रकाशित: 22 अक्टूबर 2026

पश्चिम एशिया संघर्ष के बाद भारतीय बॉन्ड बाज़ार में यील्ड बढ़ी — 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड की यील्ड ईरान-युद्ध शुरू होने के बाद से लगभग 34 आधार-अंक (bps) चढ़ी और इंडसइंड बैंक इसे 2026 के अंत तक 7.45% तक जाने का अनुमान लगाता है (Bloomberg — Moneycontrol, 1 जून 2026) [प्रेस — अनुमान, अवलोकित यील्ड नहीं]। इससे कुछ दिन पहले RBI की वार्षिक रिपोर्ट (29 मई 2026) ने चेताया था कि घरेलू बॉन्ड यील्ड पर ऊपरी दबाव बना रह सकता है [प्राथमिक — RBI वार्षिक रिपोर्ट, अ. I.38]; 2025-26 के अंतिम कारोबारी सत्र में 10-वर्षीय जेनेरिक G-sec यील्ड जुलाई 2024 के बाद पहली बार 7% के पार गई थी (The Hindu BusinessLine, 29 मई 2026) [प्रेस]।

बॉन्ड यील्ड क्या है और क्यों बढ़ती है?

बॉन्ड सरकार या कंपनी द्वारा जारी उधार-पत्र है; यील्ड उस पर मिलने वाली प्रभावी प्रतिफल-दर है। बॉन्ड की कीमत और यील्ड उल्टी दिशा में चलते हैं — जब निवेशक बॉन्ड बेचते हैं तो कीमत गिरती है और यील्ड बढ़ती है। सरकारी बॉन्ड की यील्ड पूरी अर्थव्यवस्था में उधार-लागत का आधार बनती है: यील्ड बढ़ने से सरकार का नया उधार महँगा होता है, बैंकों की बॉन्ड-धारणा का बाज़ार-मूल्य घटता है, और कॉर्पोरेट उधार भी महँगा होता है।

जून 2026: कितनी बढ़ी यील्ड?

ईरान-युद्ध की शुरुआत के बाद 10-वर्षीय यील्ड लगभग 34 bps चढ़ी; डेरिवेटिव बाज़ार आक्रामक दर-वृद्धि की कीमत लगा रहे हैं — पाँच-वर्षीय ब्याज-दर स्वैप 60 bps से अधिक चढ़ा, और छोटी अवधि के बॉन्ड सबसे अधिक प्रभावित (पाँच-वर्षीय अवधि 54 bps) [प्रेस — Moneycontrol/Bloomberg, 1 जून]। RBI वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 2025-26 में 10-वर्षीय यील्ड कुल 49 bps कठोर हुई; अल्पकालिक यील्ड नरम रहीं (मौद्रिक ढील, RBI की तरलता-जुगाड़ और एक अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी की सॉवरिन रेटिंग-उन्नति से), जबकि मध्यम-दीर्घकालिक यील्ड वैश्विक सॉवरिन यील्ड और भू-राजनीतिक जोखिमों के साथ कठोर हुईं — वक्र steepen हुआ [प्राथमिक — RBI वार्षिक रिपोर्ट, अ. VII.10]।

दबाव के कारण

कच्चे तेल की कीमतें, कमज़ोर रुपया और महँगाई-जोखिम — 5 जून की RBI समीक्षा से पहले निवेशक हॉकिश संकेत देख रहे थे [प्रेस]। राजकोषीय पक्ष: Kotak Mahindra Bank के अनुसार कर व अस्ति-बिक्री प्राप्तियों की कमी और ईंधन-उर्वरक सब्सिडी बढ़ने से राजकोषीय घाटा बजटित 4.3% से बढ़कर 4.6% (प्रतिकूल परिदृश्य में 4.8%) हो सकता है [प्रेस]। भारत विशेष रूप से संवेदनशील — भारी तेल-आयात और व्यापक सब्सिडी के कारण [प्रेस]। रिपोर्ट के अनुसार वर्षभर G-sec और कॉर्पोरेट बॉन्ड यील्ड में कठोरता-पूर्वाग्रह रहा [प्राथमिक — RBI वार्षिक रिपोर्ट, अ. I.16]; BusinessLine के रिपोर्ट-उद्धरण में Q4 (जनवरी-मार्च 2025-26) के कारण गिनाए गए: बजट 2026-27 में अपेक्षा से अधिक सकल बाज़ार-उधार और पश्चिम एशिया तनाव से कच्चे तेल में तेज़ी [प्रेस]।

बाज़ार और RBI की प्रतिक्रिया

ICICI Prudential AMC और Quantum AMC जैसे फंड-प्रबंधकों की अपेक्षा — आपूर्ति-पक्षीय (ऊर्जा) महँगाई होने से RBI दर-वृद्धि में सावधानी बरतेगा; Quantum की स्नेहा पांडे: “बाज़ार वास्तविक महँगाई नहीं, महँगाई के डर की कीमत लगा रहा है” [प्रेस]। DBS बैंक की राधिका राव: “यील्ड दीर्घकालिक भू-राजनीतिक अनिश्चितता, राजकोषीय अपेक्षाओं, ऊँची वैश्विक यील्ड और

कमज़ोर रुपये से आकारित हो रही हैं" [प्रेस]। RBI रिपोर्ट का संतुलन: सरकार की राजकोषीय समेकन-प्रतिबद्धता और RBI की तरलता-जुगाड़ ऊपरी दबाव को सीमित कर सकती है; घरेलू वित्तीय तंत्र के पास झटके सहने के पर्याप्त बफ़र हैं, यद्यपि ऊँची सॉवरिन यील्ड वित्तीय संस्थानों के निवेश-पोर्टफोलियो पर दबाव डाल सकती है [प्रेस]।

परीक्षा की दृष्टि से

- **GS-3 (अर्थव्यवस्था):** बॉन्ड कीमत-यील्ड का व्युत्क्रम संबंध; यील्ड-वक्र का steepen होना; G-sec बाज़ार और सरकारी उधार-लागत [प्रेस]।
- **मौद्रिक-राजकोषीय अंतरक्रिया:** तेल-आयात → महँगाई → दर-अपेक्षाएँ → यील्ड; सब्सिडी → राजकोषीय घाटा → उधार-माँग [प्रेस]।
- **करेंट अफेयर्स:** 10-वर्षीय यील्ड 7% के पार (2025-26 का अंतिम सत्र; जुलाई 2024 के बाद पहली बार) [प्रेस — BusinessLine]; FY26 में 49 bps कठोरता [प्राथमिक — RBI वार्षिक रिपोर्ट, अ. VII.10]; ईरान-युद्ध के बाद से ~34 bps वृद्धि [प्रेस — Moneycontrol/Bloomberg]।

यह भी पढ़ें: जून 2026 में अर्थव्यवस्था: वृद्धि, रेपो दर और घाटा

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

"भू-राजनीतिक तनाव सरकारी बॉन्ड की उपज (yields) को कैसे प्रभावित करता है? संक्षेप में ब्याज दर और विदेशी प्रवाह से संबंध समझाइए।" (सामान्य अध्ययन-III; 150 शब्द)

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: बॉन्ड की कीमत और यील्ड के उल्टे संबंध की सरल परिभाषा दें, और संदर्भ रखें कि ईरान-युद्ध शुरू होने के बाद 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड की यील्ड लगभग 34 bps चढ़ी।

मुख्य भाग में: भू-राजनीतिक तनाव के रास्ते बताएँ - कच्चे तेल की कीमतें, कमज़ोर रुपया और महँगाई-जोखिम; भारत की भारी तेल-आयात निर्भरता और सब्सिडी के कारण संवेदनशीलता; Kotak के अनुसार राजकोषीय घाटा बजटित 4.3% से 4.6% (प्रतिकूल परिदृश्य में 4.8%) तक जा सकता है, जिसे अनुमान के रूप में ही लिखें। ब्याज दर से संबंध जोड़ें: RBI की 5 जून की समीक्षा से पहले हॉकिश संकेतों की आशंका, पाँच-वर्षीय ब्याज-दर स्वैप 60 bps से अधिक चढ़ा, और फंड-प्रबंधकों की राय कि आपूर्ति-पक्षीय महँगाई पर RBI सावधानी बरतेगा। इंडसइंड का 7.45% का आँकड़ा अनुमान है, अवलोकित यील्ड नहीं। विदेशी प्रवाह पर लेख में कोई आँकड़ा नहीं है; केवल DBS की राधिका राव के कथन (ऊँची वैश्विक यील्ड और कमज़ोर रुपया) का उपयोग करें और प्रवाह के आँकड़े न गढ़ें। RBI रिपोर्ट के संतुलन का उल्लेख करें: राजकोषीय समेकन और तरलता-जुगाड़ ऊपरी दबाव सीमित कर सकते हैं।

निष्कर्ष में: लिखें कि यील्ड तेल, महँगाई-अपेक्षा, राजकोष और ब्याज-दर की उम्मीदों के संयुक्त दबाव से तय होती है; सरकार की उधार-लागत बढ़ती है, पर RBI रिपोर्ट के अनुसार वित्तीय तंत्र के पास झटके सहने के बफ़र हैं।

स्रोत

- [प्रेस] Moneycontrol (Bloomberg), "India rate risks, fiscal worries add to pressure on bond yields", 1 जून 2026 — moneycontrol.com
- [प्राथमिक] RBI, वार्षिक रिपोर्ट 2025-26 (29 मई 2026), अध्याय I (आकलन और संभावनाएँ) — अ. I.16, I.38, I.42 — rbi.org.in

- [प्राथमिक] RBI, वार्षिक रिपोर्ट 2025-26, अध्याय VII (सार्वजनिक वित्त) — अ. VII.10 (49 bps; वक्र steepening) — rbi.org.in
- [प्रेस] The Hindu BusinessLine (BL Mumbai Bureau), "Domestic bond yields could face upward pressure: RBI Annual Report", 29 मई 2026 — thehindubusinessline.com (रिपोर्ट-मूल के अ. I/VII स्वतंत्र रूप से पढ़े गए; "अंतिम सत्र में 7% के पार" वाक्य रिपोर्ट के वेब-पाठ में न मिलने से यहाँ प्रेस-उद्धरण ही)

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: बॉन्ड सरकार या कंपनी द्वारा जारी उधार-पत्र है; यील्ड उस पर मिलने वाली प्रभावी प्रतिफल-दर है।

प्रश्न: बॉन्ड यील्ड क्या है और उसका बॉन्ड की कीमत से क्या संबंध है?

बॉन्ड सरकार या कंपनी द्वारा जारी उधार-पत्र है; यील्ड उस पर मिलने वाली प्रभावी प्रतिफल-दर है। बॉन्ड की कीमत और यील्ड उल्टी दिशा में चलते हैं - जब निवेशक बॉन्ड बेचते हैं तो कीमत गिरती है और यील्ड बढ़ती है।

प्रश्न: जून 2026 में बॉन्ड यील्ड और ब्याज-दर स्वैप में क्या बढ़ोतरी बताई गई?

ईरान-युद्ध की शुरुआत के बाद 10-वर्षीय यील्ड लगभग 34 bps चढ़ी; डेरिवेटिव बाज़ार आक्रामक दर-वृद्धि की कीमत लगा रहे हैं - पाँच-वर्षीय ब्याज-दर स्वैप 60 bps से अधिक चढ़ा, और छोटी अवधि के बॉन्ड सबसे अधिक प्रभावित (पाँच-वर्षीय अवधि 54 bps)। RBI वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 2025-26 में 10-वर्षीय यील्ड कुल 49 bps कठोर हुई; अल्पकालिक यील्ड नरम रहीं (मौद्रिक ढील, RBI की तरलता-जुगाड़ और एक अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी की सॉवरिन रेटिंग-उन्नति से), जबकि मध्यम-दीर्घकालिक यील्ड वैश्विक सॉवरिन यील्ड और भू-राजनीतिक जोखिमों के साथ कठोर हुईं - वक्र steepen हुआ।

प्रश्न: बॉन्ड यील्ड पर दबाव के प्रमुख कारण क्या बताए गए?

कच्चे तेल की कीमतें, कमज़ोर रुपया और महँगाई-जोखिम - 5 जून की RBI समीक्षा से पहले निवेशक हॉकिश संकेत देख रहे थे। राजकोषीय पक्ष: Kotak Mahindra Bank के अनुसार कर व अस्ति-बिक्री प्राप्तियों की कमी और ईंधन-उर्वरक सब्सिडी बढ़ने से राजकोषीय घाटा बजटित 4.3% से बढ़कर 4.6% (प्रतिकूल परिदृश्य में 4.8%) हो सकता है।